

आदरणीय आई साब,

आपका 5 फरवरी का पत्र दोपहर के अर्थ के साथ मिला. आपके स्नेह और अंतरंग पत्र से रूब प्रसन्नता हुई. यों वीतपत्ता को लेकर आप ज़रूर लिखे बालिक हम चाहते हैं 'तनाव' के इन अन्तराष्ट्रीय कविता संग्रहों पर विस्तृत टिप्पणी लिखें. वीतपत्ता अंक के पूर्व रोजीविय की कविताओं पर केन्द्रित अंक भेजा था.

साहकोपोपा, पादलोनेरुवा की कविताओं वाले अंक भी आपका भेजे थे पत्र में उल्लेख में होने से लगता है. अंक आप तक नहीं पहुँचा पाया. गिरधर राठी दिल्ली के रहते हैं - ई-8, हाजरबास, लोदी दिल्ली - 16 उनका पता है. अनुवाद पर आपकी टिप्पणी गिरधर राठी तक पहुँचा दूँगा. गिरधरजी पहले एमनोस्क्रिप्ट में आप के साक्षर थे. वे आपकी कविता के समूह कवि हैं. आपने पिपरिया आने की बात कही है ये रूब की प्रसंग है आप ज़रूर आइये. हमने प्रतीक्षा करने शुरू कर दी है.

आई साब कथों न हम कला की प्रासंगिकता को लेकर कोई अंक नियोजित करें और ज़रूर आपके सहकार के थे संभव भी नहीं होगा. इसके निमोजन री बुनावट में आपकी स्वतात्मक अंशकियाँ के अनेक सारभों (हस्तों) को लेकर महत्वपूर्ण-रोस काम हो सकेगा. इस सिताहिले में आप रुकें.

अथ ववरिया गौन गया था. वहाँ आपकी हृष्टिओं से मुझ और कई दिनों बाद ये पत्र मिला. यह सुनद संगीत की साधनापुत्र है. जैसे साध-साध बातचीत करते चलते चलता. वहाँ अथ भी कुछ लोग आपको जानते हैं. अतीत का अंगारायक रिश्ता बनना होता है.

आदरणीय आशीजी को मेरी बधाईवादन कहें. मैं मिला नहीं है. आप भी मुझे नहीं जानते पर जो अंतरंग लय होती है और उल्लेख में फिरकना - प्रसन्न होता है. ये सरोकार भी जीवन होता है. आपके व्यक्त समूह में से मैं हमेशा आपके समूह जाने की इच्छा रखता हूँ - छोटे आई के लिए ये कपेसा लाजमी भी है. रूब प्रतीक्षा है आपसे पत्र की. पुनः हमारा.